International Journal of Research in Engineering and Science (IJRES)
ISSN (Online): 2320-9364, ISSN (Print): 2320-9356
www.ijres.org Volume 8 Issue 10 ǁ 2020 ǁ PP. 78-83

बहुमुखी प्रतिभा के धनी आचार्य जानकी वल्लभ शास्त्री

डॉ० विभा माधवी

पी-एच० डी०, नेट/जेट उत्तीर्ण
ग्राम- चंद्रनगर
पो०-कोशी कॉलेज खगड़ियाM जिला- खगड़िया, बिहार-851205

"आचार्य जानकी वल्लभ शास्त्री" का जन्म 5 फरवरी 1916 ई० को औरंगाबाद जिले के दक्षिण-पश्चिम में बसे मैगरा गाँव में हुआ था। उनका विवाह मात्र 12 वर्ष की ही उम्र में हो गया था। ये छायावादोत्तर काल के चर्चित कवि थे। "जानकी वल्लभ शास्त्री" जी उन थोड़े-से कवियों में रहे हैं, जिन्हें हिंदी कविता के पाठकों से बहुत मान-सम्मान मिला है। आचार्य का काव्य संसार विविध और व्यापक है। साल 1930 तक आचार्य श्री की संस्कृत की कविताएँ संस्कृत की प्रतिष्ठित पत्रिकाएँ - संस्कृतम्, सुप्रभातम् और सूर्योदय में प्रकाशित होती थी। शास्त्री जी ने बनारस से 1935 में शास्त्री और मैट्रिक एवं सन् 1938 में शास्त्राचार्य व इंटर की शिक्षा प्राप्त की। वाराणसी में ही सन् 1935 में महाप्राण निरालाजी से मुलाकात हुई। 16 वर्ष की उम्र में संस्कृत काव्य संग्रह को देखकर महाप्राण निराला जी ने आचार्य श्री से हिन्दी में कविता रचने को कहा। निराला जी की प्रेरणा से ही जानकी जी हिंदी भाषा में अपनी लेखनी को आजमाया। आचार्य की विभिन्न विधाओं में जितनी रचनाएँ प्रकाशित हैं, उनसे अधिक उनकी अप्रकाशित कृतियाँ हैं।

उत्तर प्रदेश सरकार ने उन्हें भारत-भारती पुरस्कार से सम्मानित किया था। आचार्य का काव्य-संसार बहुत ही विविध एवं व्यापक है। वे थोड़े-से कवियों में रहे हैं, जिन्हें हिंदी कविता के पाठकों से बहुत मान-सम्मान मिला है। जानकी जी की बहुत सी रचनायें पाठकों के बीच काफी लोकप्रिय हुई। लेकिन इनकी जो कविता मेरे मन को सबसे ज्यादा संवेदित किया वो है "रक्तमुख" :-

"कुपथ-कुपथ रथ दौड़ाता जो
पथ निर्देशक वह है,
लाज लजाती जिसकी कृति से
धृति उपदेश वह है,
मूर्त दंभ गढ़ने उठता है
शील विनय परिभाषा,
मृत्यु रक्तमुख से देता
जन को जीवन की आशा,
जनता धरती पर बैठी है
नभ में मंच खड़ा है,
जो जितना है दूर मही से
उतना वही बड़ा है।"

शास्त्री जी की कविताओं का ऋतु-वर्णन बहुत ही मोहक और मादक है:-

"मंजराई अमराई, आई ऋतु सनेह-रस-सींची।
फूलों से ढक गई डगरिया वन की ऊँची-नीची।"
कनक-कमल की खुली पंखुरियाँ निकली गंध-कुमारी।

फुनगी-फुनगी हिला गई है हँसी पवन की प्यारी।

शास्त्री जी की प्रकृति सुषमा मन को बहुत प्रभावित करती है:-

"रंग-तरंगों पर लहराती आती मलय-बहार।
फ़ाग-राग सुन-सुन गुमसुम मदमाती मलय-बयार।
टेसू टहटह लाल, सुनहला आँचल भू का फैला।
तीक्ष्ण किरण के सैन चलाता ऊपर से नभ छैला।
और बौर-मिस शीश झुलाती जाती मलय-बयार।

शास्त्री जी की कविताओं में श्रृंगार रस की कविताएँ प्रमुखता से है। कुछ श्रृंगार रस की कविताएँ देखते हैं:-

जाने क्यों मन डोल रहा है।
लाज-गड़े तट खड़े, चपल जल-
छलक-छलक कुछ बोल रहा है।
कैसी सिद्धि, कठोर साधना,
कहाँ तृप्ति, अर्चनाराधना,
स्वाती-कण सीपी का संपुर
ऐसे कैसे खोल रहा है।

शास्त्री जी की रचनाओं में कहीं हर्ष और उन्माद के पल है तो कहीं गहरी उदासी है।

पंथ जिंदगी का घोर है,
दिखता न ओर, न छोर है,
यों साँस चलती जा रही।
कैसी उदासी छा रही।
फूले चमन से रूठ कर,
बैठी विजन में, ठूँठ पर,
कवि की रचनाओं में
जलता नभ रवि की पी हाला
उगल रहे तरु पल्लव-ज्वाला।
जग के सजग ताप में निखरी-
कनक तुम्हारी काया।

शास्त्री जी की कविताएँ ओज एवं शौर्य से भरी होती है। अमृतस्य पुत्रा: कविता में -

हारकर न बैठते,
जीतकर न ऐंठते,
समर सिंधु पैठते,
अमृत पुत्र हो तुम्हीं।
इंधन में आग तुम,
कुंदन में फाग तुम,
बंधन में त्याग तुम,
अमृत पुत्र हो तुम्हीं।

जानकी वल्लभ शास्त्री जी की कविताओं में प्रकृति सुषमा के साथ-साथ कवि के निज मन की अनुभूति है। अपने अंतर्मन का सुख-दुख, आशा-निराशा, हर्ष-विषाद इनकी रचनाओं का विषय बना है।

मेघ का आना कविता में कवि का मानना की आँखों के रास्ते से मेघ बरस कर भी बहुत कुछ कह जाता है वो निष्फल नहीं होता:-

"भाता नहीं बैठ पछताना,
निष्फल नहीं मेघ का आना
मन नयनों में आ विराजता,
नयन गगन में ही गड़ जाते,"

जनता की विडम्बना यह है कि वो उस समय भी धरती पर बैठी थी, अब भी धरती पर ही है। आजादी के बहत्तर वर्षों बाद भी वही है।

जानकी जी की "सांध्यतारा क्यों निहारा जायेगा" कविता की यह पंक्ति मेरी आत्मा में समाहित होती प्रतीत होती है:-

"मैं न आत्मा का हनन कर हूँ जिया
औ, न मैंने अमृत कहकर विष पिया,
प्राण-गान अभी चढ़े भी तो गगन
फिर गगन भू पर उतारा जायेगा।"

अपनी आत्मा का हनन करके जीना क्या जीना है? जिंदगी जीना है तो स्वाभिमान के साथ जीना होगा। झूठ का सहारा लेकर नहीं। शास्त्री जी की "जिंदगी की कहानी" मानव को जीने की प्रेरणा देती है।

"ज़िंदगी की कहानी रही अनकही !
दिन गुज़रते रहे, साँस चलती रही !"

"जो जला सो जला, ख़ाक खोदे बला,
मन न कुंदन बना, तन तपा, तन गला,
कब झुका आसमाँ, कब रुका कारवाँ।
द्वंद्व चलता रहा पीर पलती रही !"

बिना तपे और गले कभी कोई कुन्दन नहीं बनता। जिंदगी के कठिन सफर में कुन्दन सा चमकने के लिए तपना और गलना पड़ता है।

जानकी जी की कविता "जीना भी एक कला है" की ये पंक्तियाँ देखिए:-

"शिशिर समझ हिम बहुत न पीना, इसकी उष्ण प्रकृति है।
सुख-दुःख, आग बर्फ दोनों से बनी हुई संसृति है
तपन ताप से नहीं, तुहिन से कोमल कमल जला है
जीना भी एक कला है।"

जानकी जी कहते हैं कि जिंदगी जीना भी एक कला है, जो सबों को नहीं आता है। सुख-दुख दोनो का सामंजस्य है जीवन।

शास्त्री जी के इस ग़ज़ल पर नजर डालते हैं:-

केसर की क्यारियाँ लहक उठीं, लो, दहक उठे टेसू के वन।
आतिशी बगूले मधु-ऋतु में, यह क्या नादानी फूलों की।

थे गुनहगार, चुप थे जब तक, काँटे, सुइयाँ, सब सहते थे;
मुँह खोल हुए बदनाम बहुत, हर शै बेमानी फूलों की।

शास्त्री जी संस्कृत में कविता करने के साथ-साथ 'निराला' की प्रेरणा से हिंदी में गीति नाट्य, कहानी, उपन्यास, आलोचना और संस्मरण आदि विधाओं में अनेक कृतियाँ साहित्य जगत को दीं। लेकिन साहित्य के इतिहास और आलोचना की 'चर्चा' में उनका नाम इस सीमा तक अल्पज्ञात है कि हिंदी का सामान्य पाठक तो क्या, शोध-विद्यार्थी भी उनके नाम और काम से लगभग अपरिचित हैं।

कालिदास जैसा उपन्यास, राधा जैसा महाकाव्य और साहित्य दर्शन जैसी आलोचनात्मक कृतियों का लेखक भी इस प्रकार से अचर्चित और अपरिचित रह सकता है, शायद हिंदी में ही संभव है। शास्त्री के शिष्य और आलोचक गोपेश्वर सिंह ने उनके समूचे साहित्य को प्रकाश में लाने का संकल्प लिया है और उसी की पहली कड़ी के रूप में किताबघर से छपी उनकी संस्मरणात्मक कृति "हंसबला"।

"हंसबला" का आधे से ज्यादा शास्त्री की आत्मकथा के रूप में है। उन्होंने प्रसाद, निराला, प्रेमचंद, अज्ञेय, जैनेंद्र और हजारी प्रसाद द्विवेदी के जो संस्मरणात्मक चित्र प्रस्तुत किए हैं वे इन साहित्यकारों के कई अलक्षित पक्षों को प्रकट करते हैं। प्रसाद-प्रेमचंद से एक साथ मिलने का ऐसा जीवंत वर्णन जानकी जी ही कर सकते हैं– "यहाँ प्रसाद और प्रेमचंद" दोनों एक-से गोरे एक-से प्रभावशाली व्यक्तित्व के व्यक्ति इतने पास-पास बैठे थे। प्रसाद का चेहरा भरा, अनिश्चय, असंतोष और आक्रोशहीन, प्रेमचंद का सूखा मुख, अंदरूनी उलझनें सुलझती-सी झुर्रियाँ, गंतव्य पर पहुँचने की पहचान लिए चमकीली आँखें। बेशक हँसी-ठहाके की एक होड़-सी मची थी, परंतु पलड़ा प्रेमचंद का हर बार भारी पड़ता था। प्रेमचंद की हंसी समुद्र मथने से बेपनाह उफनते झाग की सी और प्रसाद जी की सरोवर के निर्मल तल से उठती तरलतर तरंगों जैसी थी।" यह उद्धरण शास्त्री की अनुपम भाषा और शैली की मिसाल भर नहीं, उनके सूक्ष्म ऑब्जर्वेशन की ओर भी इंगित करता है।
शास्त्री जी को निराला का मानस पुत्र कहा जाता है। निराला की स्वर्ण जयंती पर अभिनंदन ग्रंथ की योजना थी। वह तैयार न हो पाया तो शास्त्री ने स्वयं हजार पन्नों का ग्रंथ निकालने की ठानी। हालांकि वह योजना संभवत: पूरी न हो पाई। पर निराला के जीवन का सत्य शास्त्री ने कुछ ही शब्दों में कह दिया है:- "निराला ने अतीत से विद्रोह किया, अपनी रुचि का नया वर्तमान गढना चाहा, क्षमता की भट्ठी में प्रतिभा को पिघलाया, नित नए साँचों में ढाला; पर नतीजा क्या निकला? रचना के कुछ गुलाब खिले और जिंदगी की डाल काँटों से लद गई। माना कला छिछली न रही, पर जीवन के प्रवाह में तो भंवर बन गए।"

"हजारी प्रसाद द्विवेदी" का जैसा विराट् व्यक्तित्व था, उसी के अनुरूप उन पर लेख भी सबसे लंबा है। उन पर ऐसा 'ललित संस्मरण' आज तक दूसरा नहीं लिखा गया। ऐसी अद्भुत प्रतिभा और अप्रतिम शैली के बावजूद शास्त्री साहित्यिक इतिहास के मानचित्र पर अलक्षित से ही क्यों रहे? तमाम बड़े आलोचकों, लेखकों, समीक्षकों के पास शायद इसका कोई उत्तर नहीं। शास्त्री जी के रहते तो उनको जो मान-सम्मान मिलना चाहिए वो नहीं मिल पाया लेकिन संभवत: अब उनको उनका प्राप्य मिलने का समय आ गया है।

शास्त्री जी की कुछ महत्वपूर्ण रचनायें:- मेघगीत, अवन्तिका, श्यामासंगीत, राधा (सात खण्डों में), इरावती, एक किरण: सौ झाइयाँ, दो तिनकों का घोंसला, कालीदास, बांसों का झुरमुट, अशोक वन, सत्यकाम, आदमी, मन की बात, जो न बिक सकी, स्मृति के वातायन, निराला के पत्र, नाट्य सम्राट पृथ्वीराज, कर्मक्षेत्रे मरुक्षेत्रे, एक असाहित्यिक की डायरी।
ये हिंदी व संस्कृत के कवि, लेखक एवं आलोचक थे। महाकवि आचार्य जानकी वल्लभ शास्त्री को वर्ष 2010 में 25 जनवरी को पद्मश्री देने की घोषणा हुई थी। पद्मश्री पर शास्त्री जी की प्रतिक्रिया थी कि चलो देर से ही सही सरकार ने मेरी सुध ली लेकिन बावजूद इसके पुरस्कार को लेकर सरकार की औपचारिकता उन्हें

रास नहीं आई। गृह मंत्रालय की तरफ से बायोडाटा माँगा गया था। शास्त्री जी को ये बात ठीक नहीं लगी। उन्होंने कहा कि जिन लोगों को मेरे कृतित्व की जानकारी नहीं है, उनके पुरस्कार का कोई मतलब नहीं है। शास्त्री जी ने गृह मंत्रालय से मिली चिट्ठी पर पद्मश्री अस्वीकार लिखकर वापस गृह मंत्रालय भारत सरकार को भेज दिया था। इसके पूर्व 1994 में भी उन्होने पद्मश्रीसम्मान नहीं स्वीकारा था।

काव्य संग्रह - बाललता, अंकुर, उन्मेष, रूप-अरूप, तीर-तरंग, शिप्रा, अवन्तिका, मेघगीत, गाथा, प्यासी-पृथ्वी, संगम, उत्पलदल, चन्दन वन, शिशिर किरण, हंस किंकिणी, सुरसरी, गीत, वितान, धूपतरी, बंदी मंदिरम

महाकाव्य - राधा

संगीतिका - पाषाणी, तमसा, इरावती

नाटक - देवी, ज़िन्दगी, आदमी, नील-झील

उपन्यास - एक किरण : सौ झांइयां, दो तिनकों का घोंसला, अश्वबुद्ध, कालिदास, चाणक्य शिखा (अधूरा)

कहानी संग्रह - कानन, अपर्णा, लीला कमल, सत्यकाम, बांसों का झुरमुट

ललित निबंध - मन की बात, जो न बिक सकीं

संस्मरण -अजन्ता की ओर, निराला के पत्र, स्मृति के वातायन, नाट्य सम्राट पृथ्वीराज कपूर, हंस-बलाका, कर्म क्षेत्रे मरु क्षेत्र, अनकहा निराला

समीक्षा - साहित्य दर्शन, त्रयी, प्राच्य साहित्य, स्थायी भाव और सामयिक साहित्य, चिन्ताधारा

जानकी वल्लभ शास्त्री जी जैसे विराट व्यक्तित्व वाला व्यक्ति विरले ही मिलता है। उनकी साहित्यक प्रतिभा बहुमुखी थी। हर विधा में इन्होंने अपनी लेखनी आजमायी। इनकी रचनायें आज भी जनमानस में प्रेरणा का संचार करती है।

संदर्भ ग्रंथ:-

****

1.मेघगीत,
2.अवन्तिका,
3.श्यामासंगीत,
4.राधा (सात खण्डों में),
5.इरावती,
6.एक किरण: सौ झाइयाँ,
7.दो तिनकों का घोंसला,
8.कालीदास,
9.बांसों का झुरमुट,
10.अशोक वन,
11.सत्यकाम,
12.आदमी,
13.मन की बात,
14.जो न बिक सकी,
15.स्मृति के वातायन,
16.निराला के पत्र,
17.नाट्य सम्राट पृथ्वीराज,
18.कर्मक्षेत्रे मरुक्षेत्रे,
19.एक असाहित्यिक की डायरी

20.जानकी जी का समस्त रचना संसार
21.विभिन्न पत्र-पत्रिकाएं
22.विकिपीडिया